National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(65): 293-297
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

सौ. सुवर्णा संजयकुमार केवटे
पीएच. डी. शोधच्छात्रा,
क.का.सं.वि. रामटेक

प्रो. कविता सु. होले
क.का.सं.वि. रामटेक

Correspondence:
सौ. सुवर्णा संजयकुमार केवटे
पीएच. डी. शोधच्छात्रा,
क.का.सं.वि. रामटेक

वाल्मीकी रामायण में नदीयाँ तथा जलसंरक्षण के उपाय

सौ. सुवर्णा संजयकुमार केवटे , प्रो. कविता सु. होले

❖ सारांश

मनुष्य के जीवन में जल का अनन्यसाधारण महत्त्व हैं। जल के बिना जीवन ही अधुरा हैं। हमारे संपूर्ण कार्य बिना जल के पुरे नही होते हैं। समाज में हर व्यक्ती का कर्तव्य हैं की, पानी का महत्त्व खुद समझना और दुसरों को भी समझाना। हमारे पूर्वज कहते थे की, **"जल हैं तो कल हैं।"**

वैद्यकीय सुभाषित में भी जल और अन्न के बारे में चर्चा की गयी हैं। ऐसे अनेक ग्रंथ में जल का महत्त्व और उसके संरक्षण के बारे में लिखा हैं। उनमें से वाल्मीकी रामायण में जो जल की उपलब्धता, स्रोत और उसके संरक्षण इस विषय पर प्रकाश डाला हैं।

❖ प्रस्तावना

मनुष्य के जीवन में जल का अनन्यसाधारण महत्त्व हैं। जल के बिना जीवन ही अधुरा हैं। इसलिए उसका संरक्षण करना यह मानवजाती का कर्तव्य हैं। तभी हमारे आनेवाले पिढी को जल और बिजली मिल सकती हैं। इसलिए कहा जाता हैं की, **"जल हैं तो कल हैं।"** जल के स्रोत प्राचीन ग्रंथ रामायण, महाभारत, पुराण इत्यादि अनेक ग्रंथो में मिलते हैं। इसमें से वाल्मीकी रामायण इस ग्रंथ में जलसंरक्षण के उपाय इस विषय पर विचार करेंगे।

❖ वाल्मीकी रामायण में जलवर्णन

जल तत्त्व पर्यावरण में सबसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं। जल के बिना कोई भी कार्य पुरा नही होता हैं। वाल्मीकी महर्षिने रामायण मेः जल के स्रोत और महत्त्व बताया हैं। उसपर विस्तार से प्रकाश डालने का प्रयत्न इस लेख में किया हैं।

वाल्मीकी रामायण में सात काण्ड हैं। वह निम्नलिखित हैं।

१. बालकाण्ड
२. अयोध्याकाण्ड
३. अरण्यकाण्ड
४. सुंदरकाण्ड
५. किष्किन्धाकाण्ड
६. युद्धकाण्ड
७. उत्तरकाण्ड

यह सात काण्डों में अलग-अलग जलस्रोत का वर्णन आया हैं।

❖ बालकाण्ड में जलवर्णन

बालकाण्ड में 77 सर्ग हैं। उसमें अलग-अलग सर्गो मेः 20 से अधिक श्लोकों में जल का वर्णन आया हैं।

"स मुहूर्तं गते तस्मिन् देवलोकं मुनिस्तदा।
जगाम तमसातीरं जाह्नव्यास्त्वविदूरतः॥" २/३

इस श्लोक में 'तमसा' नदी का वर्णन हैं।

"गङ्गायाश्चापि संतारं भरद्वाजस्य दर्शनम्।
भरद्वाजाभ्यनुज्ञानाच्चित्रकूटस्य दर्शनम्॥" ३/१५

इस श्लोक में श्रीरामजी ‘गङ्गा’ नदी पार करके, भारद्वाज मुनी का दर्शन करके ‘चित्रकूट’ पर्वत पहुँचते हैं।

“समर्थाधिष्ठितश्चाश्वः सोपाध्यायो विमुच्यताम्।
सरयवाश्चोत्तरे तीरे यज्ञभूमिर्विधीयताम्॥” ८/१५

शक्तिशाली वीरों के संरक्षण में आचार्यसहित अश्व को छोड़कर ‘सरयू’ नदी के तटपर यज्ञभूमि निर्माण होना चाहिए। तेइसवे सर्ग में पाँचवे श्लोक में महाबली राजकुमारोंने ‘गङ्गा’ और ‘सरयू’ नदी का शुभ संगम होनेपर दिव्य ‘त्रिपथगा गङ्गा’ नदी का दर्शन किया।

“तौ प्रयान्तौ महावीर्यौ दिव्यां त्रिपथगां नदीम्।
ददृशाते ततस्तत्र सरय्वा: सङ्गमे शुभे।।” २३/१५
“ब्रह्मणा नरशार्दूल तेनेदं मानसं सरः।
तस्मात सुस्राव सरसः सायोध्यामूपगूहते।।
सरःप्रवृत्ता: सरयूः पुण्या ब्रह्मसरश्च्युता।
तस्यायमतुलः शब्दो जाह्नवीमभिवर्तते।।
वारिसंक्षोभजो राम प्रणामं नियतः कुरु।
ताभ्यां तु तावुभौ कृत्वा प्रणाममतिधार्मिकौ।।” २४/७,१०,११

बालकांड मे चौबीस वे सर्ग में ‘मानस सरोवर’ और ‘सरयू’ नदी का वर्णन हैं। वह जल ‘गङ्गा’ नदी को जाके मिलता हैं। ‘गङ्गा’ के दक्षिण तट को प्रणाम करते हैं।

“स्वस्ति वोऽस्तु गमिष्यामि सिद्धः सिद्धाश्रामादहम्।
उत्तरे जाह्नवीतीरे हिमवन्तं शिलोच्चयम्॥” ३१/१५

इस श्लोक मे विश्वामित्र ऋषि चलते-चलते वनदेवताओं से कहते है की, ‘मै अपना यज्ञकार्य सिद्ध करके ‘गङ्गा’ नदी के उत्तर तटपर से हिमालय की उपत्यका में जाऊँगा।’

बत्तीसवे सर्ग में नववे श्लोक में महाभारत के सभापर्व में ‘विपुल’, ‘वराह’, ‘वृषभ’, ‘ऋषिगिरि’ तथा ‘चैत्यक’ इन पाँच श्रेष्ठ पर्वतों के बीच माला जैसी रमणीय ‘सोन नदी’ का वर्णन हैं। सोन नदी ‘सुमागधी’ नाम से प्रसिद्ध हैं।

“सशरीरा गता स्वर्गं भर्तारमनुवर्तिनी।
कौशिकी परमोदारा प्रवृत्ता च महानदी।।”

इस श्लोक में ‘परम उदार महानदी कौशिकी’ के रूप में भूतलपर प्रवाहित होती हैं। पैतीसवे सर्ग में चौथे श्लोक में शुभ जलसे परिपूर्ण और अपने तटो से सुशोभित होनेवाली ‘शोणनदी’ का वर्णन हैं।

“ते गत्वा दूरमध्वानं गतेऽर्धदिवसे तदा।
जाह्नवीं सरितां श्रेष्ठां ददृशुर्मुनिसेविताम्॥
तां दृष्ट्वा पुण्यसलिला हंससारस सेविताम्।
बभूवुर्मुनयः सर्वे मुदिताः सहराघवा॥” ३५/७,८

यह सातवे और आठवे श्लोक में नदीयों में श्रेष्ठ ‘गङ्गा’ नदी और हंसो तथा सारसों से सेवित ‘पुण्यजलवाली भागीरथी’ नदी का दर्शन करके श्रीराम मुनियों के साथ प्रसन्न हुए। सतरावे श्लोक में कुछ काल लौटने के पश्चात देवताओं ने देवकार्य सिद्धी के लिए ‘जेष्ठकन्या’, ‘गङ्गा’ नदी और स्वर्गसे ‘त्रिपथगा’ नदी अवतीर्ण हुई हैं।

बयालीसवे सर्ग में ‘गङ्गावतार’ की कथा आई हैं। पितरों का उद्धार करने के लिए ‘गङ्गा’ को किसप्रकार धरती पर लाना संभव होगा और जलांजली दी जायेगी यह वर्णन हैं। त्रयालीसवे सर्ग में १२ और १३ श्लोक में ‘ह्लादिनी’, ‘पावनी’, ‘नलिनी’ यह तीन धाराए सुशोभित ‘गङ्गा’ की हैं और पूर्व दिशा की ओर बहती हैं।

“गङ्गा त्रिपथगा नाम दिव्या भागीरथीति च।
त्रीन् पथो भावयन्तीति तस्मात् त्रिपथगा स्मृता॥” ४४/६

इस श्लोक मे ‘गङ्गा’ नदी ‘त्रिपथगा’, ‘दिव्या’ और ‘भागीरथी’ इन तीन नाम से प्रसिद्ध हैं। आकाश, पृथ्वी और पाताल तीनो मार्गो से जाती है इसलिए उसे ‘त्रिपथगा’ माना हैं।

“स कृत्वा नैष्ठिकीं बुद्धि जेतुकामो महायशाः।
कौशिकी तीरमासाद्य तपस्तेपे दुरासदम्।।” ६३/१४

इस श्लोक में निश्चियात्मक बुद्धि का आश्रय लेकर कामदेव को जीतने के लिए ‘कौशिकी’ नदी के तटपर तपस्या करते हैं।

बालकाण्ड में श्रीरामजी ‘पम्पा सरोवर’ के तटपर हनुमान नामक वानर से मिलते हैं। सम्पातिनामक गृध्र कहने से हनुमानजी सौ योजन लंबा समुद्र पार करते हैं। शोभाशालिनी ‘महापुरी नदी’ बारह योजन लंबी और तीन योजन चौड़ी थी ऐसा वर्णन हैं।

❖ अयोध्याकाण्ड में जलवर्णन -

अयोध्याकाण्ड में ११९ सर्गो में लग-भग २२ श्लोको में नदी और पर्वतों का वर्णन आया हैं। इसमें

पंधरावे सर्ग के पाचवे श्लोक में जल से भरा हुआ सोने का कलश, सजाया हुआ भद्रपीठ, चमकनेवाले व्याघ्रचर्मसे अच्छीतरह से आवृत्त रथ और ‘गंङ्गा-यमुना’ के पवित्र संगमसे लाया हुआ जल यह सारी वस्तुए एकत्रित कर ली थी। बीसवे सर्ग के उनपचास श्लोंक में वर्षाकाल के नए जल के प्रवाह से टकराए हुए ‘महानदी’ के कगार का वर्णन हैं।

“स तीर्त्वा सरयूपार दण्डस्तस्य कराच्च्युत:।
गोव्रजे बहुसाहस्रे पपातो क्षणसंनिधौ।।” ३२/३८

इस श्लोक में ‘सरयू’ नदी का वर्णन हैं। पैतालीस सर्ग के बत्तीसवे श्लोक में श्रीरामजी के पास से लौटते समय ब्राह्मणोंपर कृपा करने के लिए मार्ग में ‘तमसा’ नदी तिर्यक् धारा से बहती हैं। ऐसा लगता है की रघुनाथजीको रोक रही है।

“ततो वेदश्रुतिं नाम शिववारिवहां नदीम्।
उत्तीर्याभिमुख: प्रायादगसत्याध्युषितां दिशम्।।
गत्वा तु सुचिरं कालं तत: शीतवहां नदीम्।
गोमतीं गोयुतानूपामतरत् सागरङ्गमाम्।।
गोमतीं चाप्यतिक्रम्य राघव: शीघ्रगैर्हयै:।
मयूरहंसाभिरुतां ततार स्यन्दिकां नदीम्।।” ४९/१०,११,१२

उपरोक्त दस, ग्यारह, बारहवे श्लोक में शीतल और सुखद जल बहानेवाली ‘वेदश्रुति’ नदी को पार करके श्रीरामचंद्रजी दक्षिणदिशा की ओर बढते हैं। तदनंतर समुद्रगामिनी ‘गोमती’ नदी शीतल जल बहाती हैं। ‘गोमती’ नदी को पार करने के बाद रघुनाथजी मोर और हंसों कलरव से व्याप्त ‘स्यन्दिका’ नदी को पार करते हैं ऐसा वर्णन

हैं। बाद में समुद्र की रानी है उस 'देवनदी गङ्गा' के पास श्रीरामजी पहूँचते हैं। 'गङ्गा' नदी का प्रवाह 'श्रुंग्वेरपुर' में बहता हैं।

"गङ्गायमुनयोः सन्धिमासाद्य मनुजर्षभौ ।

कालिन्दीमनुगच्छेतां नदीं पश्चान्मुखाश्रिताम् ।।"५५ /०४

इस श्लोक में 'गङ्गा' और 'यमुना' नदी के संगमपर पहुचकर पश्चिममुखी होकर 'गङ्गा' मिली उन 'महानदी यमुना' के पास जाना हैं ऐसा वर्णन हैं।

छप्पन्नावे सर्ग में पैतीसवे श्लोक में 'चित्रकूट' पर्वत, उत्तम तीर्थो से सुशोभित 'माल्यवती' माने 'मन्दाकिनी' नदी का वर्णन हैं जहाँ बहोत से पशु-पक्षी सेवन करते थे । अडसटवे सर्ग में का वर्ष 'अपरताल' पर्वत का दक्षिणभाग और 'प्रलम्ब' पर्वत का उत्तरभाग इन दोनो के बीच में बहनेवाली 'मालिनी' नदी का वर्णन हैं। उसके बाद स्वच्छ जल से सुशोभित, पक्षित्रों से सेवित दिव्य ऐसी 'शरदण्डा' नदी को वेगपूर्वक पार किया।

"अभिकालं ततः प्राप्य तेजोऽभिभवनाच्युताः ।

पितृपैतामहीं पुष्पा तेरुरिक्षुमतीं नदीम् ।।" ६८/१७

राजा दशरथ के पिता-पितामहांद्वारा सेवित ऐसी पुण्यसलिला 'इक्षुमती' नदी को पार किया ऐसा वर्णन हैं। उसके बाद 'सुदामा' नामक पर्वत पार करके भगवान विष्णु के चरणों का दर्शन लेके 'विपाशा' नदी और उसके तटपर के शाल्मली वृक्षो का वर्णन हैं। आगे नदी, बावडी, पोखर, छोटे तालाब और सरोवर का वर्णन हैं।

एकहत्तर सर्ग पहिले और दुसरे श्लोक में पराक्रमी भरत ने पूर्वदिशा की ओर बहनेवाली 'सुदामा' नदी को पार किया हैं। उसके बाद 'ह्लादिनी' नदी को पारकर 'सतलज' नदी को पार किया ऐसा वर्णन हैं। 'शिला', 'शिलावहा' नामक नदी का दर्शनकरते हुए बड़े- बड़े पर्वतों का वर्णन हैं। पश्चिमवाहिनी 'सरस्वती' और 'गङ्गा' नदी पर्वतों से घिरी होने के कारण प्रखर प्रवाहद्वारा कलकल नाद करनेवाली 'कुलिङ्गा' नदी पारकर 'यमुना' तटपर पहुँचे।

"स गङ्गा प्राग्वटे तीर्त्वा समायात् कुटिकोष्टिकाम् ।

सबलस्तां स तीर्त्वाथ समगात धर्मवर्धनम् ॥" ७१/१०

इस में 'कुटिकोष्टिका' नदी का वर्णन हैं। चौदा और पंधरा श्लोक में 'उत्तानिका', 'कुटिका' और 'कपीवती' नदी का वर्णन हैं।

❖ अरण्यकाण्ड में जलवर्णन

अरण्यकाण्ड में ७५ सर्ग हैं । उसमें से ८ से अधिक श्लोकों में जलवर्णन आया हैं। पाचवे सर्ग में ३७ वे श्लोक में 'मन्दाकिनी' नदी का वर्णन किया हैं।

"इमां मन्दाकिनीं राम प्रतिस्रोतामनुव्रज ।

नदीं पुष्पोडुपवहां ततस्तत्र गमिष्यसि ।।" ५/३७

"पम्पानदी निवासानामनुमन्दाकिनीमपि ।

चित्रकूटालयानां च क्रियते कदनं महत् ।।" ६/१७

उपरोक्त श्लोक में 'पम्पासरोवर' के निकट 'तुङ्गभद्रा' और 'मन्दाकिनी' नदी, 'चित्रकूट' पर्वत का वर्णन हैं। ग्यारहवे सर्ग में ग्यारहवे श्लोक में 'पञ्चाप्सर' सरोवर जल से भरा हैं यह वर्णन हैं।

"स देशः श्लाघनीयश्च नातिदूरे च राघवः।

गोदावर्याः समीपे च मैथिली तंत्र रंस्यते ।।" १३/१८

इस श्लोक में 'गोदावरी' नदी का वर्णन हैं। सतरहवे सर्ग में उनतीस और तीसवे श्लोक में भरत भी स्नान के लिए उद्यत होकर मंत्री और प्रजाजनों के साथ 'सरयू' नदी पे जाते होंगे ऐसा वर्णन किया हैं।

"वनं चैत्ररथं दिव्यं नलिनीं नन्दनं वनं ।" ३२/१५

यहा 'नलिनी' सरोवर का वर्णन हैं। 'वैतरणी' नदी का वर्णन आगे किया हैं।

"व्यक्तं हिरण्ययांस्त्वं हि सम्पश्यसि महीरुहान् ।

नदीं वैतरणीं घोरा रुधिरौघविवाहिनीम् ।।" ५३/१९

❖ किष्किन्धाकाण्ड में जलवर्णन

किष्किन्धाकाण्ड में ६७ सर्ग हैं। उसमें १० से ज्यादा श्लोकों में जल का वर्णन किया हैं। इस काण्ड में 'पम्पा' सरोवर के दर्शन से व्याकुल होते हैं।

"मन्दाकिन्यास्तु यदिदं रूपमेतन्मनोरमम् ।

स्थाने जगति विख्याता गुणास्तस्या मनोरमाः ।।" १/९४

'मन्दाकिनी' नदीसमान प्रतीत होनेवाले इस 'पम्पासरोवर' का ऐसा मनोरम रूप हैं की संसार में उसके मनोरम गुण सुविख्यात हैं यह उचित ही वर्णन किया हैं। सत्तावीसवे सर्ग के सोलहवे श्लोक में 'त्रिकूट' पर्वत के समीप बहनेवाली 'मन्दाकिनी' नदी जैसी 'तुङ्गभद्रा' नदी बहती हैं। उसका प्रवाह पश्चिम से पूर्व की ओर बह रहा हैं। वह भी किचडरहित हैं। नाना प्रकारके वृक्ष नदी की शोभा बढ़ा रही हैं। इसमें 'जाह्नवी' और 'भागीरथी' नदी का वर्णन आया हैं।

"सम्प्रस्थिता मानसवासलुब्धाः

प्रियान्विताः सम्प्रति चक्रवाकाः ।

अभीक्ष्णवर्षोदिकविक्षतेषु

यानानि मार्गेषु न सम्पतन्ति ।।" २८/१६

इस श्लोक में 'मानस' सरोवर का वर्णन हैं। 'सरयू' नदी का वर्णन हैं। 'भागीरथी', 'गङ्गा', 'रमणीय सरयू', 'कौशिकी', 'सुरम्य कलिन्दनन्दिनी यमुना', 'सरस्वती नदी', 'सिंधू', 'मणि के जैसा निर्मल जलवाले शोणभद्र', 'पर्वतों' और 'वनों' से शुशोभित 'कालमही' इत्यादि नदियों के तट का वर्णन हैं।

"सहस्रशिरसं विन्ध्यं नानाद्रुमलतायुतम् ।

नर्मदां च नदीं रम्या महोरगनिषेविताम् ।।" ४१ /६८

बड़े नागों से रमणीय 'नर्मदा' नदी, सुरम्य 'गोदावरी', 'महानदी कृष्णवेणी' तथा 'महाभागा वरदा' इत्यादि नदियों का वर्णन हैं। उसके बाद जहा अप्सराए विहार करती हैं वह स्वच्छ जलवाली दिव्य 'कावेरी' नदी देखना हैं ऐसा कहा हैं। आगे जाके महानदी 'ताम्रपर्णी' हैं उसके द्वीप और जल चन्दन के वनोंसे युक्त हैं। वह सुंदर युवती अपने प्रियतम समुद्र से मिलती हैं ऐसा वर्णन हैं।

सिंधू नदी का वर्णन करते हुए कहते है की,

"सिन्धुसागरयोश्चैव संगमे तंत्र पर्वतः।

महान् सोमगिरिर्नाम शतशृङ्गो महादुमः ॥" ४२/१५

उसके बाद 'शैलोदा' नदी का दर्शन लेते हैं ऐसा वर्णन आया हैं।

❖ **सुन्दरकाण्ड में जलवर्णन -**

सुन्दरकाण्ड में ६८ सर्ग हैं। उसमे जलवर्णन निम्नलिखित हैं।

"निष्प्रमाणशरीरः सँलिलङ्घयिषुरर्णवम्।
बाहुभ्यां पीडयामास चरणाभ्यां च पर्वतम्॥" १/११

इस श्लोक मे ं समुद्र पार करने की इच्छा होने से हनुमानजीने अपने शरीर को बड़ा बनाया और दोनों भुजाओं से पर्वत को दबाया। तब 'महेंद्रपर्वत' से जलस्रोत बहने लगे। ऐसा लगता था की हाथी के कुम्भस्थल से मद की धारा बह रही हैं।

आगे महर्षि वाल्मीकी कहते हैं की,

"तापसाश्रमवासिन्याः प्राज्यमूलफलोदके।
तस्मिन् सिद्धाश्रिते देशे मन्दाकिन्यविदूरतः॥" ३८/१३

इसमें चित्रकूट पर्वत के उत्तर-पूर्व भागपर 'मन्दाकिनी' नदी के समीप फल-मूल और जल बहोत हैं। उस जल में जलविहार करके भीग गए ऐसा वर्णन हैं।

❖ **युद्धकाण्ड में जलवर्णन -**

वाल्मीकी रामायण के युद्धकाण्ड में १२८ सर्ग हैं। इस काण्ड में सात से अधिक श्लोकों में जलवर्णन आया हैं।

"य: पुरा गोमतीतीरे रम्यं पर्येति पर्वतम्।।" २६/२६

इस श्लोक मे 'गोमती' नदी का वर्णन हैं।

"एष दर्दुर संकाशो विनतो नाम यूथपः।
पिबंश्चरति यो वेणां नदीनामुत्तमां नदीम्॥
षष्टिः शतसहस्राणि बलमस्य प्लवंगमाः।" २६/४२

इस श्लोक में 'दर्दुर' नामक पर्वत समान विशालकाय 'विनत' नामक वानर प्रसिद्ध यूथपति हैं। वह नदियों में श्रेष्ठ 'वेणा' नदी हैं उसका पानी पीता हुआ घुमता था। उसके साठ लाख वानर सैनिक हैं ऐसा कहा हैं। नववे श्लोक में 'रीछराज' यूथपति 'नर्मदा' नदी का पानी पीता हैं। 'गङ्गा' नदी का भी वर्णन हैं

१२३ सर्ग में 'यमुना', 'पुण्यसलिला गङ्गा' नदी, यूपमालाओं से अलंकृत 'सरयू' नदी का वर्णन हैं। 'गोमती' नदी का वर्णन करते हुए कहते हैं की –

"सोऽपश्यद् रामतीर्थं च नदीं वालुकिनीं तथा।
वरूथीं गोमतीं चैव भीमं शालवनं तथा।।" १२५/२६

❖ **उत्तरकाण्ड में जलवर्णन**

उत्तरकाण्ड में १११ सर्ग में जल का निम्नलिखित हैं। चौथे सर्ग में चौबीसवे श्लोक में 'गङ्गा' नदी का वर्णन हैं। 'गङ्गा' नदीने अग्नि के छोडे हुए भगवान शिवजी के कुमार 'कार्तिकेय' को अपने तेजगर्भ से उत्पन्न किया हैं।

"तंत्र मन्दाकिनी रम्या नदीनामुत्तमा नदी।
काञ्चनैः सूर्यसंकाशैः पङ्कजैः संवृत्तोका।।" १११/४२

इसमे ं नदियों में श्रेष्ठ रमणीय ऐसी 'मन्दाकिनी' नदी बहती हैं। उसका जल सूर्य के समान प्रकाशित हैं। हैहयराज राजा अर्जुन अपनी स्त्रियों के साथ 'नर्मदा' नदी में जलक्रीडा करने चले जाते हैं ऐसा वर्णन नीचे दिए हुए श्लोक में आया हैं।

"तमेव दिवसं सोऽथ हैहयाधिपतिर्बली।
अर्जुनो नर्मदा रन्तुं गतः स्त्रिभिः सहेश्वरः।।" ३१/०९

'गङ्गा' नदी को पार करके 'तमसा' नदी के तटपर महर्षि वाल्मीकी का आश्रम हैं। उसके बाद 'गोमती', 'पापनाशिनी गङ्गा', 'भागीरथी' नदी का वर्णन हैं।

"प्रियमाणा नरव्याघ्र यमुनातीरवासिनः।
तस्य तद् वचनं श्रुत्वा रामः प्रोवाच धर्मवित्॥" ६०/०५

महर्षि लोग 'यमुना' नदी के तटपर निवास करते हैं। आगे तीर्थजल का भी वर्णन आया हैं।

इसीतरह अनेक नदियों का वर्णन वाल्मीकी रामायण मे ं अलग-अलग काण्डों में आया हैं। अभी उस जल का संरक्षण करना, नदियों को साफ और स्वच्छ रखना यह संपूर्ण समाज का कर्तव्य हैं। तभी वह जल भविष्य में के पिढीतक रहेगा। ऐसा नही करेंगे तो आनेवाली पिढी को जल की समस्या से सामना करना पडेगा।

❖ **रामायण में जल का महत्त्व और संरक्षण**

समुद्र को रत्नों का निधि कहा हैं। बने हुए राजमार्गपर उसकी शोभा बढाने के लिए फुल बिखेरे जाते हैं ऐसा वर्णन करते हैं -

'मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यशः।' बाल. ५/८

पुष्प के उपर जल का छिडकाव किया जाता था। ईख के रस जैसा मीठा और स्वादिष्ट जल हैं।

रामायण मे महर्षि वाल्मीकीजीने गंगाजल से सभी पितामहों का तर्पण करने के लिए कहा हैं। ऐसा करने से ही अपने पूर्वजों ने की हुई प्रतिज्ञा पुरी होगी। भगीरथ ने गंगा को पृथ्वीपर लाने की प्रतिज्ञा पुरी की हैं। उसी गंगाजल से स्नान करके पवित्र होने का पुण्यफल प्राप्त होगा इसतरह जल का महत्त्व रामायण मे वर्णित हैं।

'सलिले पुरुषश्रेष्ठ शुचिः पुण्यफलो भव।' बाल. ४४/१४

सभी सगर पुत्रो का गंगा नदी के पवित्र जल से विधिवत् तर्पण किया जाए इसलिए 'गंगावतरण' कथा कल्याणकारी और आयु बढानेवाली हैं। गंगाजी को पृथ्वी पर लाने से सब शोक और चिंता दूर होकर, मनोरथ पूर्ण हुए हैं। गंगाजल का भार एकदम से पृथ्वी सहन नही करती इसलिए भगवान शंकरजीने अपने मस्तकपर धारण किया ऐसा करके जल का संरक्षण किया हैं।

"अथ तद्भस्मनां राशिं गङ्गासलिमुत्तमम्।
प्लावयत् पूतपाप्मानः स्वर्गं प्राप्ता रघूत्तम।।" बाल. ४३/४१

पंकज में कमल खिलते हैं वहा भी जल आवश्यक हैं।

किष्किन्धाकांड में जलप्राप्ती करानेवाले वर्षाॠतू का वर्णन करते हुए कहते हैं की, धरती की धूल शांत हुई हैं और शीतल वारा बह रहा हैं। उष्णता कम हुई हैं। जल होने से यह सब सफल हुआ हैं। इसलिए जल का महत्त्व हैं।

पम्पा सरोवर का वर्णन करते हुए कहते हैं की वैदूर्यमणि जैसी स्वच्छ और श्याम जल हैं जल के कारण ही पम्पा तटपर अनेक प्रकारके वृक्ष और शाखाऐ सुशोभित हैं। शीतल और सुखदायी जल से नया-नया घास, नाना प्रकारके पुष्प ऐसे लगते हैं की मानो गालीचा बिछाया हैं। इसलिए जल सब के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

जल हैं इसलिए सब जगह हरियाली, फुल और रमणीय वातावरण हैं।

हिमालय से गंगा पृथ्वीपर आई तब शंकरजी ने अपने जटा मे धारण करने के बाद जब वह जल गंगाजल पृथ्वीपर छोडा गया तब जन्हु ऋषि के यज्ञ का नुकसान कर रही थी तो जन्हु ऋषिने उसका पुरा पानी पी लिया ऐसा दो बार जल का संरक्षण किया हैं। समुद्र में रहनेवाले मगरमच्छ, मच्छलियाँ और छोटे-छोटे जीवजंतू जीवित हैं।

युद्धकाण्ड मे जब सागर और श्रीरामजी का संवाद चल रहा था तब श्रीरामजी समुद्र से कहते हैं की, मैं आज पातालसहित तुम्हे सुखा डालुँगा। तब श्रीरामजी से सागर कहता हैं की मैं मेरे बाणों से सारी जलराशी सुखा दूँगा और उसमें जो जीव-जंतू हैं वह भी नष्ट हो जायेंगे। जल के स्थान पर विशाल वालुकामय प्रदेश होगा। तब श्रीरामजीने अपने बाणपर ब्रह्मास्त्र लगाकर अभिमंत्रित करके धनुष्य खींचा। तब पृथ्वी, पर्वत, नदियाँ, सरोवर में हलचल हो गई। पुरा अंधेरा छा गया। तब समुद्रने पास आकर रघुनाथजी से कहा, हे सौम्य रघुनंदन। पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और तेज ये सब आपके स्वभाव मे स्थित रहते हैं। वैसे ही मेरा भी स्वभाव ही हैं की मेरे पार कोई नही जा सकता। इसलिए मैं एक उपाय बताता हूँ। जल को स्तंभित नही होने दूँगा और आप सब लोग मेरे पार चले जायेंगे। तब श्रीरामजी का जो छोडा हुआ बाण था उस जगह एक कुँआ बन गया उसका पानी भी समुद्र के जल जैसा ही था। उस प्रदेश का नाम 'मरूप्रदेश' हैं। इस समुद्रपर पूल बनाने का काम विश्वकर्मा का औरस पुत्र 'नल' को दिया हैं। शीघ्र ही उन्होंने २२ यौजन लंबा पूल बनाया और समुद्र के उस पार पहूँच गए। इसतरह समुद्र के जल का संरक्षण भी हुआ और श्रीरामजी ने छोडे हुए बाण की जगह कुआ भी निर्माण हुआ तो वहाँ भी जल का संरक्षण ही हुआ हैं। यह सब कर्तृत्व देखकर श्रीरामजी का अलग-अलग पवित्र और शुभ जल से अभिषेक किया। आगे कहते हैं –

"जयस्व शत्रून् नरदेव मेदिनीं
ससागरां पालय शाश्वती: समा:।
इतीव रामं नरदेवसत्कृतं
शुभैर्वचोभिर्विविधैरपूजयन्॥" युद्ध. २२/८९

अर्थात शत्रूओंपर विजय प्राप्त करो और समुद्रतक संपूर्ण पृथ्वी का सदा पालन करो। उपर्युक्त वर्णन से जल का संरक्षण होगा ऐसा मत हैं।

❖ जलसंरक्षण के उपाय

जल संरक्षण करने से भूमी में जलस्तर बढ सकता हैं। हमारे पूर्वजोंने भी जलसंरक्षण पर भर दिया था। वह स्मरण करने के लिए 'रामायण', 'सिंधू', 'हडप्पा' संस्कृती के उदाहरण के रूप में नागरिकों को दिया हैं। समाज में सब लोगोने जलसंरक्षण के उपायों के लिए अलग-अलग प्रयास और प्रयत्न कियेआनेवाली पिढी को पानी अच्छेसे मिल सकता हैं। जहा पाणी हैं वहा आस-पास हम पेड-पौधे लगा सकते हैं। ऐसा करने से पाणी से जुडी समस्याओं से दूर रह सकते हैं। ऐसे करके बहोत सारी जगह पानी का संकट कम होकर जमीन मे पानी का स्तर बढ सकता हैं। यह स्वातंत्र्य के अमृत महोत्सवी वर्ष में मा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदीजी ने मन की बात में पारंपारिक उपाय बताया था।

जल संरक्षण के उपाय में संस्कृत विभाग प्रो. मनोज कुमारने रामायण काल के वातावरण और पर्यावरण का उदाहरण लिया हैं। उन्होने कहा की, नदी और द◌ुसरे जलस्रोतो को कैसे पवित्र रखा जा सकता हैं। ऐसे वर्तमानस्थिती में बिगडते हुए पर्यावरण को बचा सकता हैं। जल को प्रदूषित नही होने देना हैं। सतत पौधे लगा सकते हैं। पृथ्वी पर सभी जीव-जंतू, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे को जीवित रहने के लिए जल की आवश्यकता हैं। जल का संरक्षण करने से पर्यावरण संतुलन बना रहता हैं।

❖ निष्कर्ष -

वाल्मीकी रामायण के अभ्यास के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष निकलते हैं।

- ➢ रामायण के सातों कांडों में जल का वर्णन आया हैं।
- ➢ संपूर्ण मनुष्यजीवन में जल का अनन्यसाधारण महत्त्व हैं।
- ➢ जल के सबका जीवन अपूर्ण हैं यह सर्वविदित ही हैं। इसलिये जल का संरक्षण करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय हैं।
- ➢ "जल हैं तो कल हैं।" यह उक्ती पूर्णतः सत्य हैं।

❖ संदर्भग्रंथसूची –

१. महर्षि वाल्मीकिप्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (सचित्र, हिंदी-अनुवादसहित) प्रथम खण्ड, प्रकाशक एवं मुद्रक – गीताप्रेस, गोरखपुर – २७३००५ (गोविन्दभवन – कार्यालय, कोलकाता का संस्थान) संस्करण २०६८ चालीसवाँ पुनर्मुद्रण

२. महर्षि वाल्मीकिप्रणीत श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण (सचित्र, हिंदी-अनुवादसहित) द्वितीय खण्ड, प्रकाशक एवं मुद्रक – गीताप्रेस, गोरखपुर– २७३००५ (गोविन्दभवन – कार्यालय, कोलकाता का संस्थान) संस्करण २०६८ चालीसवाँ पुनर्मुद्रण

३. श्रीवाल्मिकी रामायण – श्री श्याम कुलकर्णी, प्रकाशक – ई साहित्य प्रतिष्ठान, प्रकाशन – ५ ऑक्टोबर २०२२ (विजयादशमी शके १९४४)

४. वाल्मीकी रामायण (समग्र समालोचन) प्रवचने – गुरुदेव डॉ. काटे स्वामीजी